सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | मई-जून, 2012

स्वर्गीय धन

"धर्मी का थोड़ा, दुष्टों के बहुत धन से उत्तम है।" (भजन संहिता 37:16)

इन दिनों आदमी हमेशा धन की खोज में है। उनका भरोसा धन पर है। मगर प्रभु कहते हैं कि धर्मी का थोड़ा धन, उनके लिए सुरक्षा और खुशी लाता है। जो परमेश्वर को जानते हैं, दिव्य स्वभाव में धनी होने की इच्छा रखते हैं, उनके लिए यह बहुत बड़ा आशीर्वाद है। ऐसा आदमी कहीं भी जाए, प्रसन्नता और स्वास्थ्य फैलाता है। वह स्थिर व्यक्ति है। 'यहोवा पर भरोसा रख और भला कर, देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह। यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा। (भजन संहिता 37:3,4)

खुशी-खुशी परमेश्वर के जीवन के मार्ग में चलकर ही तुम अपने आप को खुश कर पाओगे।

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

STAR UTSAV

चैनल पर

*हर **शनिवार सुबह 7:30** से **8:00** बजे*

सचमुच में मुक्तिदाता

"हे यहोवा हम को अपनी ओर फेर ला, कि हम फिर संगठित हो जायें, जैसे हम प्राचीन समयों में थे वैसा ही हमको फिर कर दे।" (विलापगीत 5:21)

कई खतरों के सिग्नल बड़े साफ दिखाई पड़ते हैं। शारीरिक ह्रास के चिन्हों को देखकर हम तत्काल कदम उठाते हैं और सलाह और उपचार के लिये किसी भरोसेमंद डाक्टर के पास जाते हैं। जिन चिन्हों का मतलब दिल का दौरा पड़ने की संभावना हो सकती है उन खतरे के चिन्हों को दिखने पर हम उदासीन नहीं रहते। यह बात आसानी से मैं समझ नही पाता कि कैसे समझदार लोग अपने चारों ओर के लोगों और उनके परिवारों के नैतिक पतन को देखकर भी उदासीन रहते हैं।

यर्मियाह, जो इस्त्राएल के पाप को देखकर ही नहीं बल्कि उनकी आत्मिकता की गहरी गिरावट और नैतिक पतन को देखकर रोया। और वह उन्हें परमेश्वर के शीघ्र आनेवाले दंड के बारे में चेतावनी देता था। क्या इस्त्राएल ने समय पर दी गई चेतावनी पर गौर करके, अपने पापों से पश्चाताप किया, क्या उन्होंने अपने आप को और अपने बच्चों को असंख्य बिमारियों और कष्टों से बचाया?

मैं ने इस बात को पाया कि जब लोग भारी गलती कर परमेश्वर को बहुत दुख पहुँचाते हैं तो वे अपनी गिरी हुई स्थिति को देखने और पहचानने में असमर्थ हो जाते थे और उनपर गहन आत्मिक अंधकार छा जाता था।

इस आत्मिक अंधकार का दौर काफी लम्बा चलता रहा। इससे पहले कि वे सजग हो पाते उन्हें और उनके परिवार को नुकसान पहुँच चुका होता था। ऐसा नुकसान कि परिवार का सर्वनाश हो जाता है। उनकी क्षति पूर्ति नही हो पाती और बच्चे बर्बाद हो जाते हैं। लगातार अनाज्ञाकारिता के कारण कष्ट और हानि पीढ़ियों तक बनी रहती है। हमारी अनाज्ञाकारिता की छाप साफ-साफ हमारे वंशजों पर दिखाई पड़ती है।

जब हमारे जवानी के पापों का फल और अनाज्ञाकारिता का प्रभाव बाद के सालों में असर डालता है, तब हमें पवित्रता के मार्ग से मुड़ जाने की गलती के लिए बड़ी गहराई से पश्चाताप करना चाहिये और प्रभु को खोजना चाहिये। हमें मसीह यीशु से सच्चे टूटेपन के साथ क्षमा माँगने की ज़रूरत है।

यर्मियाह विलाप करता है, "जैसे हम प्राचीन समयों में थे वैसा ही हमके फिर कर दे।" यहाँ केवल एक

विरह का उल्लेख नहीं है, "अच्छे पुराने दिन।" कभी-कभी यह उक्ति बहुत ही पथभ्रष्ट कर देती है। इन दिनों में ज्ञान बहुत बढ़ गया है। इसलिये हमारे चारों ओर बहुत तेजी से परिवर्वन आ रहे हैं। कूड़े कर्कट के साथ अंधविश्वासी प्रथाओं की गलाघोंटू पकड़ अब टूटती जा रही है। जो लोग परमेश्वर के नियमों को और अपने परिवार को आसानी से तोड़ डालते हैं उनके लिये विवाह का पवित्र बंधन अब महत्वहीन होता जा रहा है।

जीवन की तेज दौड़ में बीस से तीस वर्ष तक की उम्र बड़ी जल्दी बीत जाती है। जब तक नौजवान जीवन के दूसरे दशक में अपनी कल्पनाओं की दौड़ में तीसरे दशक तक पहुँचते हैं तो अपने आप को थका-हारा, निराश, निस्हाय, टूटा और धुंधलाहट में पाते हैं।

इसके साथ-साथ, उनमें से कुछ कड़ुवाहट से भर, निराश हो जाते हैं। वे सरलता से अपने लड़कपन के सालों और उदण्डता से भरे सालों को भुला देना चाहते हैं।

यर्मियाह जानता था कि परमेश्वर ने अपने बच्चों से प्रतिज्ञा की है, "यहोवा तुझ को पूंछ नहीं, सिर ही बनाएगा, तू नीचे नहीं, ऊपर ही रहेगा - यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की उन आज्ञाओं को जिनका आदेश मैं आज दे रहा हूँ सुनकर ध्यान से उनका पालन करे।" (व्यवस्थाविवरण 28:13) आगे अचूक तरीके से परमेश्वर ने अपने बच्चों को मिस्त्र की गुलामी से निकाला, लाल समुद्र को पार करवाया और रेगिस्तान के बीच में, जहाँ कुछ भी नहीं उपजाता था, संभाला। यर्मियाह ने अपने विवेक से इस तरह लिखा। उसके लिये यह प्रार्थना बड़ी स्वाभाविक थी, "यहोवा हमारे पास लौट आईये, परमेश्वर हमें फिर से नया बनाईये।"

परमेश्वर के हरेक बच्चे को सच्चे तौर पर आत्मिक जीवन में फिर से नया बनना जरूरी है। हर चर्च और हमारी तरह सहभागिता में भी आत्मिकता में पुनः नया बनना जरूरी है। प्रभु ने कहा कि परमेश्वर का राज्य राई के दाने के समान है। राई का बीज, क्या ही नगण्य और छोटा सा बीज है! पर जब उसमें जीवन आता है तब वह बढ़ता है। तब चिड़ियाँ अपना घोंसला उसकी डालियों पर बनाती हैं। सो नया जीवन एक दीन और टूटे हुए हृदय में ही बढ़ता है।

जब नये जीवन का आरम्भ होता है, महत्वपूर्ण चीजों का आरंभ होने लगता है। जहाँ जीवन नीरस, दर्दमय और उजाड़ था वहाँ नयी ताकत और अनुग्रह का संचार होने लगाता है। कितने लोगों ने आत्महत्या कर अपने जीवन का अंत करने की योजनाओं को बनाया। उनकी उदासी और अंधकार के बीच अचानक प्रभु यीशु उन्हे मिले और उनका जीवन पूरी तरह से बदल गया। और ऐसा बदलाव कि उसी पुराने व्यक्ति को लोग पहचान नहीं पाते।

यह अंधकार की शक्तियां हैं जो आपसे कहती हैं, "अब खत्म हो जाओ, एक छलांग, एक कूद, एक घूंट जहर और सब कुछ खत्म हो जायेगा। आपकी सभी मुश्किलें खत्म हो जायेंगी।" नहीं यह सच नहीं है। सच्ची विपत्ति नरक से शुरू होती है। जहाँ कीड़े कभी मरते नहीं और न कभी आग बुझती है। आत्महत्या करना एक भयानक पाप है। परमेश्वर कहते हैं, "तू हत्या न करना," मृत्यु किसी भी विपत्ति का समाधान नहीं है बल्कि यह आपके चारों ओर के लोगों के लिये पीड़ा और दुख लाती है।

आईये हम सकारात्मक बने। हम परमेश्वर को मौका दें। जब आप बाइबल का अध्ययन करते हैं, आप अपनी ज़रूरत को जीवित और प्रेमी परमेश्वर को सौंप दें। जो आपकी उदासीनता को दूर करना शुरु करते हैं। उद्धारकर्त्ता (प्रभु यीशु मसीह) पर पूरा भरोसा रखें जो आपकी देखभाल करता है। वह आपके निष्ठुर दिल को दया से भरना शुरू करता है।

क्या आपने अपनी सेहत खो दी है? प्रभु यीशु से मांगिये कि वे उसे वापस दें। मुझे अपने लड़कपन के दिनों में एक डाक्टर की अच्छी याद है। उस डॉक्टर को हमारे घर पर एक टैक्सी में लाया गया। उनकी उदास पत्नी टैक्सी ड्राईवर की मदद से अपने पक्षाघात(लकवे) से पीड़ित पति को घर के अन्दर लायी। मेरे पिता ने उनके

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

लिये प्रार्थना की। कुछ दिनों बाद वही व्यक्ति बिना किसी का सहारा लिए हमारे घर से चल कर वापस गया। परमेश्वर से कहें कि वे आपके स्वास्थ्य को फिर से दें।

आज बहुत से लोग हैं जिनकी दिमागी नसें कमजोर हैं। मैंने उनसे कहा, "यीशु से कहें कि वे आपको नयी और मजबूत स्नायु प्रदान करें।" जहाँ प्रेम नहीं है, जहाँ नकारात्मक बातें और कड़ुवाहट अधिक है। वहाँ जल्द ही तनाव पैदा होने का पर्याप्त मौका है। प्रेम ही चंगा करने वाला है।

हमारा परमेश्वर नयी शुरुआत देने वाला परमेश्वर है। वह नवीनीकरण और जागृति लाने वाला परमेश्वर है। जब कोई एक पुरानी कार को कई सालों के इस्तेमाल के बाद कबाड़ में बेच देता है। कोई उसकी मरम्मत करने की कोशिश नहीं करता। मानो आपका जीवन भी मरम्मत न होने के जैसा दिखाई पड़ता हो क्योंकि आपने अपने जीवन को बहुत बर्बाद किया और नष्ट किया है पर यीशु आपको पूरी तरह नया बना सकते हैं। यही वजह है कि यह अनोखा शब्द उनके लिये इस्तेमाल होता है। वह सच्चा उद्धारकर्त्ता है। आईये हम अपने घमंड को मौका न दें ताकि इस नये वर्ष में हमारी उन्नति में हमारा घमंड बाधक न बने।

स्वर्गीय धन ... पृष्ठ 1 से

'याह की स्तुति करो। क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है। उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा, सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी।' (भजन संहिता 112:1,2)

खुशी-खुशी प्रभु की दी आज्ञाओं का पालन करना - न कि अनमने होकर। हो सकता है ये आज्ञाएं तुमको धनी न बना पाये - वे तुमको बड़ा और प्रख्यात न बना पाये, मगर वे परमेश्वर का स्वभाव तुमको देती हैं, जो स्वभाव यीशु मसीह में प्रकट हुआ है। यह बहुत बड़ी आशीष है। वह तुम्हे शान्ति देगा। 'वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे, अपनी जीभ को बुराई से रोके रख, और अपने मुंह की चौकसी कर कि उस से छल की बात न निकले।' (भजन संहिता 34:12-14)

इसलिए कि तुम शान्ति के राजकुमार की संतान हो, शान्ति खोजना औऱ उसका अनुसरण करना। सम्भवतः तुम एक झोंपड़ी मे रहते हो और सादा भोजन खाते हो, लेकिन अगर तुम में परमेश्वर की शान्ति और मसीह का स्वभाव है तो तुम एक आशीष पाये मनुष्य हो। जंगली जानवरों के बीच जंगल में शान्ति नहीं हो सकती। मनुष्यों के दिलों में शान्ति नहीं है। हृदय में झगड़ा बसा है। 'तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहां से आ गए?' क्या उन सुख-विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगो में लड़ते - झगड़ते हैं? (याकूब 4:1)' मनुष्य एक अशांत प्राणी है। वह अपने आप को नहीं जानता और यह कि उसे क्या चाहिए। वह धन खोजता है, जो उसे शांति नहीं दे सकता। वे जो मसीह का स्वभाव खोजते हैं उनके पास शान्ति होगी। धर्मी का थोड़ा सा धन दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है। एक सच्चा धर्मी जन अपना मन, धन पर नहीं लगाता है।

मनुष्य को स्वास्थ्य बनाए रखने में परमेश्वर की सब आज्ञाएं सहयोग करती हैं। जब आप एक घर का निर्माण कर रहे हो तो कई सिद्धांतों का पालन करना पड़ता है। सिर्फ एक दीवार का निर्माण करने के लिए भी कुछ न कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है। कई दूसरे नियम, नींव को बैठाने के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं और इत्यादि। ऐसे ही हमारे जीवन के निर्माण के लिए परमेश्वर ने कई आज्ञाएं दी हैं। उस में से एक यह है कि धन की नहीं बल्कि परमेश्वर के स्वभाव की खोज करनी चाहिए। 'मैंने दुष्ट को बड़ा पराक्रमी और ऐसा फैलता हुआ देखा, जैसे कोई हरा पेड़ अपनी निज भूमि में फैलता है। परन्तु जब कोई उधर से गया तो देखा कि वह वहाँ है ही नहीं, और मैंने भी उसे ढूँढा, परन्तु कहीं न पाया।' (भजन संहिता 37:34-36)

'यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है और उनका भाग सदैव बना रहेगा। विपत्ति के समय उनकी आशा न टूटेगी और न वे लज्जित होंगे, और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे। मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूँ, परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है।' (भजन संहिता 37:18,19,24) धर्मी की संतान का परमेश्वर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। जो आदमी अधर्म के पैसों के लिए हाथ न फैलाए, कठिन परिश्रम करता है तथा परमेश्वर के आसरे में रहता है उसे तृप्त किया जाएगा। वह स्वर्गीय धन खोजता है और सुबह, दोपहर और रात इस धन को खोजने के लिए अपने आपको प्रशिक्षित करता है। उसके मन में

सत्य की परख

"यहोवा का धन्यवाद करो, क्यों कि वह भला है; और उसकी करुणा सदा की है।"(भजन संहिता 107:1)

अशांति नहीं होगी।

अंततः परमेश्वर अपने नियम को तुम्हारे मन में रखने के लिए और तुम्हारे हृदय में लिखने का वादा देता है। दिमाग अपने तंत्र-प्रतिक्रियाओं को नियन्त्रण में करता है। तुम्हारी इच्छाओं और चाहत पर मन काबू रखता है। लोग धन के पीछे भागते हैं और शाश्वत संपत्ति नहीं खोजते, जो है - परमेश्वर की धार्मिकता। जो आदमी यह नहीं सोचता कि अपने नैतिक और आध्यात्मिक जीवन को सही करे वह धर्मी कैसे बना रहेगा? परमेश्वर की आराधना करने के लिए न आकर लोग कई तरह के बहाने बनाते हैं। क्या इस संसार में कोई परमेश्वर के साथ समय बिताकर पीड़ित हुआ है? क्या वे आगे जाकर अगुवे न बने? तुम में से कुछ लोग ज़रूर मिशनरि बनोगे। जो आदमी अपने बाइबल को जानता है और प्रार्थना करना जानता है वह एक दिन ज़रूर मिशनरि बनेगा। इधर-उधर हो रही सब सभाओं में नहीं भगना। तुम्हारा समय सीमित है। एक स्थान में स्थिरता से वृद्धि पाना बेहतर है। जो लोग इधर-उधर, हर जगह पर भागते हैं कुछ नहीं बटोरते। हम अपने को दूसरों से श्रेष्ठ नहीं मानते।

हमारे लिए परमेश्वर की खास बुलाहट है, जिसे हमको पूरा करना है। मूसा का काम यहोशू से अलग था। क्या हुआ होता अगर नहेम्याह ने यहोशू का अनुगमन किया होता? वे युद्ध लड़ते जाते और ज्यादा भूमि जीतते, जिसे से कोई उद्देश्य पूरा नहीं होता। हमारे लिए परमेश्वर का एक उद्देश्य है। बहुत जानने का दावा हम नहीं करते हैं। उनकी कृपा से लड़खड़ाये बगैर, प्रकट किये गये स्तर के पीछे-पीछे हम चल रहे हैं।

माँ की प्रार्थना

परमेश्वर के उत्तम जन, एक माँ की प्रार्थना, प्रतिज्ञायें और पिता की पावन निष्ठा से ही पले और बढ़ा किये गये है। धन्य है ऐसे आदमी-औरत या लड़के-लड़की का जीवन जिसका इस दुनिया में स्वागत, न केवल दर्द सहते बल्कि प्रार्थना से भी किया गया हो। जिसके आने से पहले, उसकी माँ या पिता के हाथों ने परमेश्वर को थाम लिया हो।

कहा जाता है कि महानता का असली राज़ बहुधा उस व्यक्ति की माँ की प्रार्थना और व्यक्तिगत पवित्रता से ही संबन्ध मिलाता है। एक मसीही माँ की डायरी में ऐसा लिखा हुआ था: "आज सुबह, अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करने के लिए मैं बहुत सवेरे उठ गयी थी। खास अपने बेटों के लिए प्रार्थना करने कि वे यीशु मसीह के सेवक और मिशनरि बन पाये। उनके निमित्त माँ की प्रार्थनाओं का बहुतायत से जवाब मिला। परमेश्वर की सेवा के लिए उनके आठों बच्चों ने प्रशिक्षण पाया। उसके पाँच बेटे, यीशु मसीह के सेवक और मिशनरि बने। बाकी, कलीसिया में जाने माने मसीही बन गये।

श्रीमती विन्सलो के जीवन में अभिलिखित है कि परमेश्वर के अनुग्रह से उन्होंने निश्चित किया कि उसके परिवार का हरेक जन परमेश्वर के दाहिने हाथ पर पाया जाए। वह प्रार्थना में उनके लिए लम्बे समय तक व्दंद करती रही। उनकी प्रार्थना बेकार नहीं गयी। उनको यह देखने का आनंद मिला कि परिवार का हरेक सदस्य उद्धारकर्ता का अनुभव, प्राप्त कर पाया।

कहा जाता है कि भारत देश के श्रीमान और श्रीमती ईड़ा स्कॅड्डर के नौ बच्चों ने उस देश में मिशनरि सेवा के लिए अपना जीवन समर्पति किया। उनके सात बेटे और दो बेटियाँ थी। इसका एक मात्र विवरण श्रीमान स्कॅड्डर द्वारा दिया गया था: "अक्षरशः उनकी माँ की प्रार्थना के जरिये ही सारे बच्चों ने, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाया।" हरेक बच्चे के जन्म दिन पर, उस बच्चे के लिए, उस दिन प्रार्थना में बिताने की वह आदी थी।

अगस्टीन के मन फिराव के लिए उसकी माँ ने कई साल, व्यथा भरी प्रार्थना में बिताये। फलस्वरूप आने वाले अवर्णनीय आशिषों के बारे में उसकी माँ, मोनिका ने शायद ही सोचा होगा। और किस तरह परमेश्वर अपना उद्देश्य और अपने राज्य के लिए उसके बेटे का इस्तेमाल करेगा।

मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने के लिए मोफेट की माँ ने उनसे विनती की। परमेश्वर ने मोफेट को नया बनाया, मन में गैर मसीहियों के प्रति अद्भुत उत्साह भरा। उसकी सेवकाई को बहुतायत से सफलता दी। उसकी माँ ने कभी नही सोचा कि परमेश्वर, उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर इस तरह देंगे।

कहा जाता है कि जॉन न्यूटन ने अपने माँ के घुटनों के पास प्रार्थना करना सीखा था। उसके मन पर अपनी माँ के जीवन का प्रभाव, बहुत महत्वपूर्ण रहा। जॉन के आठ साल का होने से पहले ही उसकी माँ का स्वर्गवास हो गया। फिर भी, कई साल बाद, जब न्यूटन समुद्र में खतरों से घेरा हुआ था, उसकी दर्द भरी प्रार्थना यह थी; "मेरी माँ के परमेश्वर, दयावान परमेश्वर, मुझ पर अनुग्रह कर!" उनकी प्रार्थना को परमेश्वर ने सुना था। जब से जॉन न्यूटन ने अपना मन फिराया, कलीसियाओं में उनका बहुत सम्मान किया जाता था।

न्यूटन के जरिये ही थॉमस स्काट जो कॉमॅन्टेटर थे, मसीह की ओर फिरे। विल्बर फोर्स भी, जो गुलामों की मुक्ति के बड़े समर्थक और 'प्रेक्टिकल न्यूस ऑफ क्रिस्टियानिटी' नामक पुस्तक के लेखक भी थे। उन्होंने ही लेइ रिचमॉड को भी मसीह की सेवकाई में अगवाई की। जोनतन एड्वाडस, बिशप हॉल, फिलिप हेन्री, हूकर, पेसन, डॉड्रिड्ज, और वेस्ली भाईयों - इन सबकी माँतायें बहुत प्रार्थना करने वाली थी। इन सबने अपनी सफलता का रहस्य, परमेश्वर के द्वारा अपनी माँ को ठहराया है।

एक जाने माने व्यक्ति ने कहा, "जब मैं छोटा था, मेरी माँ मुझे अपने बगल में घुटनों पर बैठने को कहती। उसके सर पर हाथ रखकर प्रार्थना करती! जब तक कि मैं उसकी प्रार्थनाओं के मोल को समझता, वह चल बसी; मैं अपनी समझ के अनुसार चलने पर मजबूर था। दूसरों की तरह, दुष्ट वासनाओं के प्रति ही मेरा झुकाव रहा। मगर ऐसा लगता था कि कोई मुझ पर नज़र रखे हुए है। ऐसा लगता मानो कोई नाजुक हाथ मेरे सर पर रखा हुआ हो। जब मैं जवान हुआ, मैं कई देशों में घूमा करता था और कई प्रलोभनों का सामना करता था। जब मैं बहक जाता, तब वही हाथ मेरे सिर पर महसूस करता और मैं बच निकलता। अपने खुशहाल बचपन की तरह, उसके दबाव का मुझे एहसास होता। और कई दफा उसके साथ-साथ एक पावन स्वर भी, जो कहता "बेटा, इस भयंकर दुष्टता को मत करना, परमेश्वर के विरुद्ध पाप ना करना।"

कई सालों पहले, सोमरविल (NJ) में एक माँ रहती थी। उसका बेटा जो जवान था, व्यसनी जीवन जी रहा था। एक शाम उसने अपने बेटे से विनती की कि उस शाम वह उनसे दूर ना बिताये। मगर उसने दावा किया कि वह ऐसा ही करेगा। उसने कहा, "माँ, मैं तुम्हारे आंचल से बन्धा नही रह सकता; मैं ज़रूर जाऊँगा।" माँ ने उत्तर दिया. "यह ज़रूर कृपया याद रखने की कोशिश करना, कि तुम्हारे वापस आने तक, आज रात घुटनों पर रहकर, मैं हर पल परमेश्वर से माँगती रहूँगी कि तुम्हारा उद्धार करे।

रूखा, असभ्य हाव-भाव और कसम खाते हुए बेटा वहाँ से चला गया। और भर रात शर्मनाक कामुकता में बितायी। जब वह घर लौटा सुबह के चार बज गये थे। जब वह अपने वहशीपन में मग्न था, अपनी माँ को अपने विचारों से बाहर रखे था। जब घर लौटा तो, किवाड़ से रोशनी दिखाई दे रही थी। अंदर झाँका तो, घुटनों पर अपनी माँ को प्रार्थना करते पाया, "परमेश्वर, मेरे भटकते हुए बेटे को बचाना।"

कमरे में जाकर, अपने बिस्तर पर गिर पड़ा। मगर उसको नींद नहीं आयी। कुछ देर बाद उठकर वह अपने घुटनों के बल बैठ गया। ऐसा लग रहा था कि मसीह का सामर्थ उस कमरे से निकल रहा है जहाँ संघर्ष करती उसकी माँ परमेश्वर से विनती कर रही थी। उस सामर्थ ने इस तरह पुकारने में उसे मजबूर किया, "परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।" उसी सुबह उसने उद्धार पाया।

उसके उद्धार का समाचार सारे मोहल्ले में फैल गया। उस समय से तीन हफ्तों के अंदर दो सौ से भी अधिक नौजवानों ने अपना मन फिराया। यह नौजवान डॉ. टि. डि. विठ टॉलमेज के पिताजी थे।

महंगा अनुग्रह

पश्चाताप की जरूरत महसूस किये बिना माफी का प्रचार करना, कलीसिया के अनुशासन बिना बापतिस्मा, पापों को स्वीकार किये बिना प्रभु के भोज में भाग लेना, व्यक्तिगत पाप कबूल किये बिना क्षमादान - यह सस्ता अनुग्रह है। शिष्यता के बिना अनुग्रह, क्रूस के बिना अनुग्रह और देहधारी, जीवित यीशु मसीह के बिना अनुग्रह, सस्ता अनुग्रह है।

महँगा अनुग्रह, खेत में छिपे हुए उस धन जैसा है जिसे पाने के लिए एक मनुष्य आनंद से अपना सब कुछ बेच कर उस खेत को मोल लेता है। वह बहुमूल्य मोती है जिसे खरीदने के लिए व्यापारी अपना सब कुछ बेच देता है। यह मसीह का राजसी नियम है जिसका पालन करने के लिए, यदि एक मनुष्य की आंख उस से पाप करवाये तो वह उसे निकालकर फेंक देता है। यह यीशु मसीह का बुलावा है जिस पर चेला अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे चल पड़ा। महंगा अनुग्रह वह सुसमाचर है जिसे बार-बार खोजने की जरूरत है। एक तोहफा जिसे माँग कर पाना है। वह एक दरवाज़ा है जिस पर मनुष्य को खटखटाना चाहिए।

ऐसा अनुग्रह मूल्यवान है क्योंकि उसके पीछे चलने के लिए वह हमें आदेश देता है। वह अनुग्रह है क्योंकि हमे यीशु मसीह के पीछे चलने के लिए बुलाता है। वह महंगा है क्योंकि परमेश्वर के पुत्र को अपना प्राण से मोल भरना पडा। मगर वह अनुग्रह है क्योंकि वह पाप को ग्रहणीय ठहराता है - पापी को धर्मी ठहराता है, इसलिए वह अनुग्रह है। इन सबसे बढ़कर वह मूल्यवान है क्योंकि परमेश्वर को अपने पुत्र के जीवन से दाम चुकाना पडाः "तुम दाम देकर मोल लिए गए हो।" जिस के लिए परमेश्वर को इतना दाम चुकाना पडा, वह हमारे लिए सस्ता नही बन सकता। सब से बढ़कर परमेश्वर ने अपने पुत्र की इतना प्रिय ना माना कि वे हमे बचाने के लिए उसके प्राण का दाम ना दे, बल्कि हमारे लिए उनका बलिदान किया। महत्वपूर्ण अनुग्रह - स्वयं परमेश्वर का देहधारी बनना है।

- डी ट्रीच बॉनहोयर।